BA Part I(H)
Paper II

Dr. Chiranjeev kumar Thakur
Assistad Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

सन्दर्भ समूह Referencegroup (रॉबर्ट के. मर्टन) ⇒ सन्दर्भ समूह का सर्वप्रथम प्रयोग 1942 में हाइमेन ने किया था। सन्दर्भ समूह का सम्बन्ध सदस्यों के मनोविज्ञान से होता है। हाइमेन ने मनोवैज्ञानिक आधार पर दो प्रकार के समूहों का उल्लेख किया है -

(1) सदस्यता समूह - व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से जिस समूह में रहकर जीवन व्यतीत करता है और उसकी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेकर उसके सदस्यों से प्रभावित होता है, उसे वह व्यक्ति का सदस्यता समूह कहते हैं।

(2) सन्दर्भ समूह ⇒ कुछ समूह ऐसे होते हैं जिनका सदस्य न होने के बाद भी व्यक्ति उन्हें अपना आदर्श मानता है तथा उनके आचरणों और मूल्यों से अपना एकीकरण करने का प्रयत्न करता है। ऐसे समूह व्यक्ति का सन्दर्भ समूह बन जाते हैं क्योंकि इन्हीं के सन्दर्भ में व्यक्ति के विचारों और मनोवृत्तियों का निर्माण होता है तथा मानसिक रूप से भी व्यक्ति अपने आप को उनके समीप समझता है।

मर्टन ने हाइमेन के सन्दर्भ समूह को संशोधित रूप से प्रस्तुत किया है। अमेरिकन सैनिकों के एक विस्तृत अध्ययन के

आधार पर लिखित 'The American Soldier' में मर्टन तथा रोजी ने सन्दर्भ समूह की अवधारणा को सामने लाने का प्रयत्न किया है। सन्दर्भ समूह की अवधारणा को स्पष्ट करते मर्टन ने लिखा है कि एक व्यक्ति के सन्दर्भ समूह के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह उसकी सदस्यता समूह से भिन्न ही हो। व्यक्ति जिस अन्तःसमूह का सदस्य होता है, वह अन्तःसमूह भी व्यक्ति का सन्दर्भ समूह हो सकता है। इसी शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जब व्यक्ति का अन्तःसमूह ही अपने सदस्य को व्यवहार के निर्देश देता है तब उसका सदस्यता समूह ही उसका सन्दर्भ समूह बन जाता है जबकि किसी बाहरी समूह द्वारा मानसिक रूप से निर्देश ग्रहण करने की दशा में एक बाह्य समूह व्यक्ति का सन्दर्भ समूह होता है। अतः मर्टन के अनुसार सन्दर्भ समूह का सिद्धान्त हमें यह बताता है कि व्यक्ति अंतःसमूह अथवा बाह्य-समूह को किस प्रकार अपने व्यवहार का निर्देशक मानने लगता है और उस समूह से अपना अपना सन्दर्भ स्थापित कर लेता है। इसे स्पष्ट करने के लिए मर्टन ने अनेक ऐसे समूहों का उल्लेख किया जिन्हें निम्न-न दशाओं में व्यक्ति का सन्दर्भ समूह कहा जा सकता है।

① सदस्यता समूह: सन्दर्भ समूह के रूप में :- अमेरिकी सैनिकों के अध्ययन के आधार पर मर्टन ने यह पाया कि अक्सर एक व्यक्ति अपने ही समूह के कुछ ऐसे व्यक्तियों को अपने आचरण का आदर्श अथवा सन्दर्भ मानने लगता है जिनकी -

उपलब्धियां अधिक होती है अथवा जिन्होंने अपने जीवन में अधिक सफलता प्राप्त कर ली होती है।

② बहुल सन्दर्भ समूह ⇒ व्यक्ति के आचरणों का सन्दर्भ व्यवहार कोई एक समूह ही नहीं होता अपितु व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में अनेक समूहों को अपने व्यवहार का आधार मान सकता है। उदाहरण के लिए यदि अनुशासन में रहने वाले विद्यालय सैनिक टुकड़ियों को पुरस्कार प्रदान किये गये हो तो एक सामान्य सैनिक के सामने यह समस्या उत्पन्न हो सकती है कि वह किस सैनिक को अपना आदर्श माने। मर्टन के अनुसार ऐसी दशा में व्यक्ति दो प्रमुख आधारों पर सन्दर्भ का चुनाव करता है - परिस्थिति की समानता के आधार पर तथा सम्पर्क की निरन्तरता के आधार पर।

③ गैर सदस्यता समूह ⇒ मर्टन का मत है कि यह जरूरी नहीं है कि कोई व्यक्ति केवल उसी समूह का सदस्य हो जिसका वह सदस्य है। वह उस समूह का भी सदस्य हो सकता है जिसका कि वह सदस्य नहीं है।

④ इसरे विशिष्ट ⇒ मर्टन का कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति का सामने कुछ इसरे प्रतिष्ठित समझे जाने वाले लोगों की प्रतिमा होती है जिन्हें कि हम 'इसरे विशिष्ट' कह सकते है। ये लोग उस व्यक्ति की निगाहों में आदर्श होते हैं और इसलिए वह इन व्यक्तियों के साथ समरूपता स्थापित करना चाहता है अर्थात् उन 'इसरे विशिष्ट' व्यक्तियों जैसा बनना चाहता है।

(5) नकारात्मक सन्दर्भ समूह ⇒ व्यक्ति जिस समूह को अपने सन्दर्भ समूह के रूप में देखता है, यह आवश्यक नहीं है कि वह व्यक्ति को सदैव स्वरूप रूप में ही प्रभावित करे। कोई सन्दर्भ समूह ऐसा भी हो सकता है जिसका प्रभाव व्यक्ति पर नकारात्मक अथवा अस्वस्थ हो।

सन्दर्भ समूह के प्रकार्यात्मक पक्ष ⇒ सन्दर्भ समूह का प्रकार्यात्मक पक्ष व्यक्ति का प्रत्याशित समाजीकरण करना है। जब एक व्यक्ति किसी सन्दर्भ समूह से अपनी एकरूपता स्थापित करने का प्रयत्न करता है तब उसके व्यक्तित्व में बहुत से नए मूल्यों, विचारों व्यवहार प्रतिमानों तथा आदर्शों का समावेश होने लगता है।

सन्दर्भ समूह के अकार्यात्मक पक्ष ⇒ सन्दर्भ समूह के अकार्यात्मक पक्ष को स्पष्ट करते हुए मर्टन ने लिखा है कि एक गुप्त सामाजिक व्यवस्था में सन्दर्भ समूह द्वारा किया जाने वाला प्रत्याशित समाजीकरण व्यक्ति के लिए प्रकार्यात्मक हो सकता है लेकिन स्वयं उस समूह अथवा स्तर के लिए अकार्यात्मक होता है जिसका कि वह व्यक्ति सदस्य होता है।